INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND TECHNOLOGY
ISSN 2582-7359
PEER-REVIEWED JOURNAL
IMPACT FACTOR 6.328

पर्यावरण संरक्षण में विश्नोई समुदाय की भूमिका

डा. दीपा कौशिक
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास
राजकीय कन्या महाविद्यालय
राजगढ़ (चूरू)

प्रकृति मानव जीवन का आधार है। प्रकृति के वास्तविक रूप को सुशोभित करते पेड़–पौधे, वायु, जल, भूमि, मृदा, प्राणी, वन्य जीव–जन्तु सभी पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। इनके द्वारा ही पर्यावरण का निर्माण होता है। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है, जो किसी जीवधारी को प्रभावित करती है। यदि हम पर्यावरण के विस्तृत रूप पर विचार करते हैं तो यह अपनी समग्रता में व्यक्ति, समाज व सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करने में सक्षम है। प्रकृति समस्त चराचर जगत से संबंधित है। जड़ और चेतन दोनों घटक मिलकर प्रकृ ति का निर्माण करते हैं। इनसे मिलकर पर्यावरण की सृष्टि होती है। पृथ्वी का पर्यावरणीय संतुलन सभी जीवों के लिये आवश्यक होता है, मनुष्य के लिये इसका सर्वाधिक महत्व है।

Key Words: पर्यावरण संतुलन, विश्नोई पंथ के प्रवर्तक गुरु **जाम्भोजी**, **अमृता देवी** का बलिदान, खेजड़ली वृक्ष, जीव–पादप।

वर्तमान प्रौद्योगिकी युग में पर्यावरण संतुलन एक विकट समस्या है। ग्लोबल वार्मिंग से पर्यावरण में निरंतर विकृतियां उत्पन्न हो रही हैं। पर्यावरण असंतुलन की समस्या केवल भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। मनुष्य की अनिश्चित आवश्यकताओं की पूर्ति व औद्योगीकरण की चकाचौंध ने इस समस्या को और जटिल बना दिया है। इस समस्या का कुछ हद तक निराकरण अधिकाधिक वृक्षारोपण करके ही किया जा सकता है।

प्रकृति और मानव का संबंध सदैव घनिष्ठ रहा है, परन्तु मानवीय सभ्यता का जैसे–जैसे विकास होता गया वह प्रकृति से दूर होने लगा। स्वयं को श्रेष्ठ समझने लगा और प्रकृति के प्रति उपेक्षा का भाव रखने लगा। वास्तव में हम प्रकृति की संतान हैं स्वामी नहीं। जब हम स्वामी बनने की लालसा करने लगते हैं, तभी हमारा पतन प्रारम्भ हो जाता है। मनुष्य अपने उपयोग हेतु प्रकृति का शोषण करने लगा, वृक्षों की अन्धाधुन्ध

कटाई होने लगी। वनों के स्थान पर मल्टीस्टोरी बिल्डिंगों का निर्माण होने लगा, परिणामस्वरूप प्रकृति का संतुलन व सामंजस्य बिगड़ने लगा और वह मनुष्य के स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालने लगा।

मानव संस्कृति को प्राचीनकाल से पृथ्वी पर फलीभूत करने में वृक्षों का अथाह योगदान रहा। मानव जीवन की आधारभूत आवश्यकतायें रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति मूलतः वनों पर ही आधारित है। भारतीय धर्म ग्रन्थ, वेद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत व अन्य साहित्यिक ग्रन्थ हमें पर्यावरण संरक्षण और वन पारिस्थितिकी को बनाये रखने की अवधारणा को समझाते हैं, चाहे वे प्राकृतिक कारक हों या मानवीय गतिविधियों के कारक। हिन्दू दर्शन सदा से पर्यावरण के प्रति संवेदनशील रहा है। छठी शताब्दी ई.पू. में बौद्ध धर्म ने सत्य, अहिंसा, पेड़–पौधों तथा वनस्पति जीवों सहित जीवित प्राणियों के लिये प्रेम पर जोर दिया।

मौर्यकाल में कौटिल्य द्वारा लिखित 'अर्थशास्त्र' ग्रन्थ शासनकला व प्रशासन के साथ पर्यावरण के प्रति जागरूकता को दर्शाता है। भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक महान का उल्लेख अहिंसा प्रधान ऐसे शासक के रूप में किया जाता है जिसने पशुओं की देखभाल के लिये चिकित्सालय, पौधों की देखभाल व संरक्षण के लिये नर्सरी और प्रजा के लिये सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष लगवाये। हर्षवर्धन व शेरशाह सूरी द्वारा राजमार्गों के निर्माण के कारण असंख्य पेड़ों को काटना पड़ा लेकिन पर्यावरण संतुलन व प्रजा हित को दृष्टिगत रखकर इनके द्वारा सड़क के दोनों तरफ हजारों नये वृक्ष लगवाये गये।

मध्यकालीन राजस्थान में पर्यावरण के प्रति सामाजिक चिन्ता विभिन्न रूपों में प्रकट हुई। जिसमें विश्नोई समुदायों की शिक्षाओं में पर्यावरण को विशेष महत्व दिया जाता है। विश्नोई संप्रदाय के प्रवर्तक संत **जाम्भोजी** मध्ययुग के संक्रामक काल में सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पर्यावरण के परिष्करण व संरक्षण के माध्यम से समाज में चेतना जागृत की। गुरु **जाम्भोजी** भक्ति युग के महान संत होने के साथ–साथ महान चिन्तक व पर्यावरण के प्रति लगाव के कारण विश्व के प्रथम पर्यावरण वैज्ञानिक व लोकचेत्ता के रूप में जाने जाते हैं। **जाम्भोजी** के चिंतन का केन्द्र सामान्यजन था।

जाम्भोजी के अनुयायी विश्नोईयों ने प्रकृति संरक्षण को जीवन का आधार माना। **जाम्भोजी** की मान्यता थी कि पेड़–पौधों में भी जीवात्मा है अतः समस्त जीवों व

उनके प्रति अहिंसात्मक व सदाचारयुक्त व्यवहार करो। विश्नोई समाज इसी परम्परा का निर्वहन करते हुये जीव कल्याण व वृक्षों की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग का संदेश सम्पूर्ण समाज को देता है। **जाम्भोजी** ने यह महसूस किया कि थार के मरुस्थलीय क्षेत्र में निरन्तर पड़ने वाले अकाल का प्रमुख कारण वनस्पति का न होना था, जबकि लोगों की आजीविका का आधार पशुपालन एवं कृषि ही था। गुरु **जाम्भोजी** ने मानव के विकास व उसके अस्तित्व के लिये मानव, जीव–जन्तु व पेड़–पौधों के विभिन्न घटकों के संतुलन पर जोर दिया। आज मरुस्थल में प्रकृति, पक्षी जीवन विशेषकर खेजड़ी के वृक्ष, काले हिरण और मोर की जो अतुल सम्पदा दिखती है उसका श्रेय निश्चय ही **जाम्भोजी** को जाता है। **जाम्भोजी** द्वारा स्थापित विश्नोई पंथ के 29 नियमों की आचार संहिता में से कई नियम जैसे हरे वृक्षों को नहीं काटना, गाय, भेड़, बकरी आदि पशुओं को नहीं मारना, ईंधन को बीनकर तथा दूध व पानी को छानकर पीना, प्रातः हवन करना आदि पर्यावरण व वायु की शुद्धता, प्रदूषण को रोकने व जीव हत्या को रोकने की दिशा में सराहनीय प्रयास थे।

गुरु जी ने जीव दया व वृक्षों की रक्षा का संदेश दिया। विश्नोई पंथ हेतु अहिंसा एवं वृक्ष रक्षा संबंधी नियम मात्र सैद्धान्तिक ही नहीं थे अपितु पूर्णतः व्यावहारिक व सांस्कृतिक विश्वास से जुड़े थे। खेजड़ी के पेड़ आम जनता के लिये कल्पवृक्ष के समान था क्योंकि इससे पशुओं को केवल चारा ही नहीं वरन् उसकी फलियों से मनुष्य को भोजन भी मिलता था। ग्रामीणों को ईंधन की लकड़ी इन्हीं जंगलों व पेड़ों से मिल रही थी।

श्रीमति **अमृता देवी** का आन्दोलन पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अग्रणी प्रभाव रखता है। यह आन्दोलन लगभग 290 वर्ष पूर्व हुआ। सन् 1730 में जोधपुर नरेश अभय सिंह ने जब अपने नये राजमहल के निर्माण के लिये सैनिकों को खेजड़ली गाँव से पेड़ों की लकड़ी काटकर लाने का आदेश दिया, इसके विरोध में **अमृता देवी** पेड़ों की रक्षा हेतु सिपाहियों के विरुद्ध खड़ी हो गयीं और पेड़ों के तनों को अपनी बाँहों से पकड़ लिया। लेकिन सिपाहियों पर **अमृता देवी** व आसपास के गाँवों से आये ग्रामीणों की विनती का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाते रहे। वे पेड़ों के बदले अपने सिर कटवाने को तैयार हो गये। **अमृता देवी** की तीन पुत्रियाँ आसु, रत्नी व भागु भी अपनी माँ के साथ खड़ी थीं। जब सिपाहियों पर विश्नोई आंदोलन में **363 विश्नोई स्त्री–पुरुषों** ने खेजड़ी वृक्षों की रक्षा के लिये अपने प्राण त्याग दिये। पर्यावरण प्रेमी रिचर्ड बरबे बेकर ने भारत आने पर जब इस घटना को सुना तब

उन्होंने विश्व के सभी देशों में **'वृक्ष मानव संस्था'** के नाम से इस कहानी को प्रचारित किया।

"If a tree is saved even at the cost of one's head, it is worth it."

विश्नोई आन्दोलन आर्थिक संरक्षण, वन्य जीव संरक्षण और हरे भरे वृक्षों की रक्षा का प्रथम संगठित आन्दोलन था। पर्यावरण आन्दोलन के इतिहास में इसे **'चिपको आन्दोलन'** का पूर्ववर्ती माना जाता है। मानव जीवन के प्रत्येक सोपान में वृक्षों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मत्स्य पुराण में एक वृक्ष को दस पुत्रों के समान माना गया है। आज भी हिन्दू धार्मिक परम्परा में तुलसी, आम, नारियल, कमल, बरगद आदि पेड़ों व पुष्पों का महत्वपूर्ण स्थान है। वृक्षों की पूजा के पीछे इसके दोहन व निरंतर विकास की महत्वपूर्ण अवधारणा रही होगी क्योंकि चीज वस्तु की व्यक्ति पूजा करता है, उसकी कभी क्षति नहीं होने देता। लेकिन वर्तमान उपभोगवादी समाज में मनुष्य की इच्छायें व आवश्यकतायें निरंतर बढ़ती जा रही हैं। पेड़ों की निरन्तर कटाई से मानव पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। ऐसे में लोकमंगल की भावना से ओत–प्रोत **जाम्भोजी** की शब्दवाणी मनुष्य को अपने मूल से जोड़ती है। यदि आज भी हम गुरु **जाम्भोजी** की अहिंसा मिश्रित प्रकृति संरक्षण की परम्परा को विस्तार दें तब मानव के भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं। गुरु **जाम्भोजी** ने व्यक्ति को समाज तथा उसकी संस्कृति के विषय में जागृत कर संस्कारों की महत्ता से परिचित करवाया।

वस्तुतः आधुनिक समाज में पर्यावरण संरक्षण हम सब की एक साझा जिम्मेदारी है जो सतत विकास, तकनीकी नवाचार, व्यक्तिगत जागरूकता, शिक्षा के माध्यम से पूर्ण की जा सकती है। ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण, सौर व पवन ऊर्जा का उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन के माध्यम से प्रदूषण को कम करने में मदद मिलेगी। संयुक्त राष्ट्र संघ व प्रशासन द्वारा प्रयासरत पर्यावरण संरक्षण संबंधी नियमों का हम सभी को पालन करना होगा। जल, मृदा, वनस्पति, वन यदि स्वस्थ रहेंगे तभी पर्यावरण संतुलित रहेगा। केवल पृथ्वी ही ऐसी जगह है जहाँ पूरे ब्रह्माण्ड में जीवन सम्भव है और जीवित रहने के लिये इसकी मौलिकता को बनाये रखने की आवश्यकता है। अन्त में अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का यह श्लोक इस संदर्भ में बहुत सार्थक है–

'यत् भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. http://www-britannica-com/science/environment
2. विश्नोई पंथ और पर्यावरण संरक्षण – शोध लेख, डा0 पुष्पा विश्नोई
3. राजस्थान का इतिहास, कला संस्कृति, साहित्य परम्परा व विरासत – पृ.सं. 297, डा. हुकमचंद जैन, डा. नारायण लाल माली
4. राजस्थान के संत कवियों के दर्शन एवं उनकी लोकधर्मिता – पृ.सं. 111, डा. रामप्रसाद दाधीच
5. पर्यावरण संरक्षण प्राचीन भारत में – तंवर रेणु 2018
6. पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों से प्राप्त सामग्री
7. Bishnoism-org, श्री जय खीचड़ से प्राप्त सामग्री